महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

- पूर्ण शोध लेखन प्रेषित करने की अंतिम तिथि : 14.11.2019
- पंजीकरण की अंतिम तिथि : 14.11.2019

पंजीकरण शुल्क : रु॰ 500/-
विद्यार्थी एवं शोधार्थी हेतु : रु॰ 300/-

सम्पर्क सूत्र

- डॉ॰ विजय नारायण सिंह - शोध पत्र (9431477003)
- डॉ॰ गौरीनाथ राय - शोधपत्र एवं पंजीयन (7903093668)
- डॉ॰ उमेश कुमार - शोधपत्र एवं अन्य विषयक (9931215941)
- श्री मनोज कुमार - पंजीयन (8083693196)
- डॉ॰ सूर्य नारायण प्रसाद (9204614430)

मुख्य संरक्षक

प्रो॰ (डॉ॰) गुलाब चन्द राम जायसवाल
मा॰ कुलपति, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

संरक्षक

प्रो॰ (डॉ॰) गिरीश कुमार चौधरी
मा॰ प्रतिकुलपति, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

मुख्य अतिथि

डॉ॰ बालमुकुंद पाण्डेय
राष्ट्रीय संगठन सचिव, अ॰भा॰ इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

विशिष्ठ अतिथि

प्रो॰ राजीव रंजन
अध्यक्ष, इतिहास संकलन समिति, बिहार

अध्यक्ष (Chair-Person)

प्रो॰ (डॉ॰) कनक भूषण मिश्र
प्रभारी प्राचार्य, एस.जी.जी.एस. कॉलेज, पटना सिटी

आयोजन सचिव (स्थानीय)

डॉ॰ अखिलेश कुमार
अध्यक्ष, इतिहास विभाग, एस.जी.जी.एस. कॉलेज, पटना सिटी

समन्वयक (Co-ordinator)

डॉ॰ विजय नारायण सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, एस.जी.जी.एस. कॉलेज, पटना सिटी

सह-समन्वयक

डॉ॰ गौरी नाथ राय
वरीय सहा॰ आचार्य, संस्कृत विभाग, एस.जी.जी.एस. कॉलेज, पटना सिटी

परामर्शदातृ मण्डल

- प्रो॰ जयदेव मिश्रा, विभागाध्यक्ष, प्रा.भा.इ. एवं पुरा. विभाग, पटना विमि॰, पटना
- प्रो॰ व्रजेशपति त्रिपाठी, प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, एस.जी.जी.एस. कॉलेज, पटना सिटी
- प्रो॰ मनीष कुमार सिन्हा, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, मगध विश्व॰, बोधगया
- प्रो॰ पीयूष कमल, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, मगध विश्व॰, बोधगया
- डॉ॰ नवलकिशोर यादव, सदस्य, बिहार विधान परिषद्
- प्रो॰ उषा प्रसाद, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एंड साइंस, पटना
- प्रो॰ राजेश शुक्ला, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एंड साइंस, पटना
- प्रो॰ नवीन कुमार, प्रा.भा.इ. एवं पुरा. विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- प्रो॰ योगेन्द्र कुमार, इतिहास विभाग, अरविन्द महिला कॉलेज, पटना
- प्रो॰ महेश कुमार शरण, अध्यक्ष, इतिहास संकलन समिति, गोरखा प्रान्त, गोरखपुर
- प्रो॰ शिवचन्द्र सिंह, हिन्दी विभाग, आर॰पी॰एम॰ कॉलेज, पटना सिटी
- प्रो॰ श्यामल किशोर, अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, टी.पी.एस. कॉलेज, पटना
- डॉ॰ रामाकान्त शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास वि॰, पाटलिपुत्र विश्व॰, पटना
- डॉ॰ शिवेश कुमार, इतिहास विभाग, एल.एन. कॉलेज, भगवानपुर (वैशाली)
- डॉ॰ श्रीनिवास पाण्डेय, वाणिज्य विभाग, बी॰डी॰ कॉलेज, पटना

आयोजन समिति

प्रो॰ तलत आरा अशरफी
डॉ॰ मिथिलेश कुमार
डॉ॰ राम स्वरूप भगत
डॉ॰ संजय कुमार श्रीवास्तव
डॉ॰ अशोक कुमार
डॉ॰ विनय कृष्ण प्रसाद
डॉ॰ ए॰ पी॰ दास
डॉ॰ सुबोध कुमार सिंह
डॉ॰ करुणा राय
डॉ॰ ज्योति शंकर सिंह
डॉ॰ उपेन्द्र प्रसाद सिंह
डॉ॰ अनिल कुमार सिंह
डॉ॰ विनय कृष्ण तिवारी
डॉ॰ राम अवधेश राय
डॉ॰ हृदय नारायण यादव
डॉ॰ अंजनी कुमार
डॉ॰ अम्बुज किशोर झा
डॉ॰ मो॰ अब्बास
डॉ॰ उमेश कुमार
डॉ॰ अरविन्द कुमार सिंह
डॉ॰ फजल अहमद
डॉ॰ मो॰ शम्स तबरेज असलम
डॉ॰ नरेन्द्र कुमार सिंह
डॉ॰ राजीव कुमार सिंह
डॉ॰ बिरेन्द्र कुमार
श्री मनोज कुमार (रिसर्च फेलो)

श्री शैलेश कुमार, संगठन महासचिव, इतिहास संकलन समिति, बिहार
डॉ॰ सूर्य नारायण प्रसाद, कोषाध्यक्ष, इतिहास संकलन समिति, बिहार
डॉ॰ हेगोयल, जिला संयोजक, इतिहास संकलन समिति, नालन्दा
डॉ॰ निगम भारद्वाज, सीनियर रिसर्च फेलो, आई.सी.एच.आर, नई दिल्ली

मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीच्यूट ऑफ एशियन स्टडीज (MAKAIAS)

द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं एशिया

19 नवम्बर, 2019 (मंगलवार)

आयोजक

Estd. 1960

श्री गुरु गोविन्द सिंह महाविद्यालय
पटना सिटी

इतिहास संकलन समिति, बिहार

आयोजन स्थल

श्री गुरु गोविन्द सिंह महाविद्यालय
पटना सिटी, पटना-800008

हर्ष के साथ सूचित करना है कि इतिहास विभाग, श्री गुरु गोविंद सिंह महाविद्यालय, पटना सिटी में मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीच्यूट ऑफ एशियन स्टडीज (MAKAIAS) एवं इतिहास संकलन समिति, बिहार के संयुक्त तत्त्वावधान में **19 नवम्बर, 2019** को **"भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं एशिया"** विषय पर एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में इतिहास के प्राध्यापक, शोधार्थी एवं इतिहास विषय में रूचि रखने वाले अन्यान्य विद्वान् सादर आमंत्रित हैं। प्रख्यात विद्वानों, विषय विशेषज्ञों एवं शोधप्रज्ञ इस संगोष्ठी में प्रस्तावित विषय पर व्याख्यान देंगे।

आयोजक संस्था :- सन् 1960 ई॰ में स्थापित श्री गुरुगोविंद सिंह महाविद्यालय, पटना सिटी पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना की एक महत्त्वपूर्ण एवं विशिष्ठ अल्पसंख्यक-सह-अंगीभूत इकाई है। इस महाविद्यालय की स्थापना सिक्खों के दशवें गुरु श्री गुरुगोविंद सिंह महाराज की पुण्य स्मृति में की गई है। इस महाविद्यालय में विद्यार्थियों के शिक्षण हेतु उच्च गुणवत्ता वाले योग्य, अनुभवी एवं समर्पित शिक्षकों की एक लम्बी शृंखला है। इस महाविद्यालय में लगभग 10 हजार विद्यार्थी कला, विज्ञान और वाणिज्य के अतिरिक्त BCA एवं BBA में अध्ययनरत हैं। पूर्ण Wi-fi परिसर एवं समृद्ध पुस्तकालय से सुसज्जित इस महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना, N.C.C., क्रीड़ा परिषद् इसके विशेष आकर्षण हैं।

MAKAIAS के संदर्भ में :- मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीच्यूट ऑफ एशियन स्टडीज (MAKAIAS) भारत सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय की एक स्वायत शोध संस्थान है, जो सामाजिक विज्ञान विषय में कार्यरत हैं। यह संस्थान 19वीं शताब्दी के मध्य से भारत के सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में हुए परिवर्त्तन एवं विकास के व्यापक अध्ययन में कार्यरत हैं। यह भारत एवं समकालीन एशियाई देशों के विशेषकर इनके भारतीय संबंधों के शोध पर काफी बल दिया है। यह संस्था मौलाना अबुल कलाम आजाद के संदर्भ में भारत एवं समकालीन एशियाई देशों के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र में किए गए कार्यों का विशेष रूप से अध्ययन एवं शोध करती है। यह संस्थान विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों एवं शोधरत विद्वानों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आदि शोधपरक कार्यों का वित्तीय पोषण करती है। वर्त्तमान राष्ट्रीय संगोष्ठी MAKAIAS के वित्तीय अनुदान से ही आयोजित की जा रही है।

इतिहास संकलन समिति, बिहार :- इतिहास संकलन समिति, बिहार अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली की एक सम्बद्ध इकाई है। यह इतिहास के क्षेत्र में कार्यरत विद्वतजन का एक राष्ट्रव्यापी संगठन है, जो इतिहास, संस्कृति, परम्परा आदि के क्षेत्र में प्रामाणिक, तथ्यपरक एवं सर्वांगपूर्ण इतिहास, लेखन तथा प्रकाशन आदि की दिशा में कार्यरत है। भारतीय इतिहास लेखन का जो कार्य अंग्रेजों के नेतृत्व में आरम्भ हुआ और वैज्ञानिक वस्तुपरक शोध के नाम पर जिसे भारतीय इतिहासकारों ने भी अपनाया वह अनेक स्थानों पर पूर्वग्रह से प्रेरित तथ्यों के अज्ञान अथवा जानबूझ कर की गई उपेक्षा पर आधारित है जिसके कारण भारतीय इतिहास में अनेक विसंगतियाँ एवं भ्रम उत्पन्न हो गए हैं। इतिहास लेखन में भारतीय स्रोतों की अवहेलना कर उसे तिरस्कृत किया गया। भारतीय परम्पराओं एवं साहित्यिक स्रोतों की उपेक्षा आदि से भारत का इतिहास विकृत हुआ है। इतिहासकार के मन में किसी सर्वमान्य राष्ट्रीय आदर्श के अभाव तथा विभिन्न राजनीतिक वादों के प्रभाव ने राष्ट्रीय स्तर पर उसे वैज्ञानिक अस्पष्टता से ग्रस्त कर दिया है। इन विचारों की पृष्ठभूमि में इतिहास संकलन समिति का उद्देश्य है, भारतीय कालगणना के आधार पर सृष्टि रचना के प्रारम्भ से लेकर वर्त्तमान समय तक के इतिहास का पुनर्मूल्यांकन। हमारे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा जीवन के अन्य सभी पक्षों को दर्शाते हुए हमारे देश का वास्तविक सूत्रबद्धात्मक तथा व्यापक इतिहास तैयार किया जायेगा। यह संगठन इतिहास लेखन के क्षेत्र में सार्थक एवं प्रामाणिक रूप से कार्यरत है।

संगोष्ठी के संदर्भ में :- भारत का विदेशों से संबंध का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। उत्तर पाषाण काल के अवशेषों एवं सिंधु सभ्यता के अवशेषों से मध्य एशिया, चीन, पूर्वी द्वीप समूहों से भारत का अन्य देशों से संबंध होने के प्रमाण मिलते हैं। भारतीय अपने मूल स्थान से निकलकर चारों ओर के देशों में दूर-दूर तक अपनी बस्तियाँ बसाई, राज्य स्थापित किए तथा वहाँ ज्ञान, सभ्यता और संस्कृति का प्रसार किया। प्राचीन भारत में ऐसे अनेक शासक एवं धर्माचार्य हुए, जिन्होंने अपने धर्म के प्रचार प्रसार से विदेशों में लोगों को प्रभावित कर उन्हें भारतीय संस्कृति के प्रभाव में लिया। भारतीय सभ्यता संस्कृति का प्रभाव चीन, जापान, श्याम, इण्डोनेशिया, अफगानिस्तान, कम्बोडिया, श्रीलंका सहित विभिन्न एशियाई देशों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस परिचर्चा से स्पष्ट होगा कि बृहत्तर भारत केवल एक कल्पना नहीं बल्कि एक ऐतिहासिक सच्चाई है। भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद विभिन्न एशियाई देशों को प्रभावित किया तथा उनमें नव जागरण लाया।

प्रस्तावित शीर्षक पर अध्ययन हेतु निम्नलिखित उप शीर्षक पर विमर्श कर सकते हैं :-

1. भारतीय धर्म का प्रचार-प्रसार
2. एशियाई देशों के साथ व्यापारिक संबंध
3. एशियाई देशों पर भारत का राजनैतिक प्रभाव
4. एशियाई देशों के कला एवं स्थापत्य पर भारतीय प्रभाव
5. एशियाई देशों के सामाजिक जीवन पर भारत का प्रभाव
6. एशियाई देशों के आर्थिक जीवन पर प्रभाव
7. विभिन्न एशियाई देशों में भारतीयों का प्रवासन
8. इससे संबंधित अन्य विषय ।

संगोष्ठी में भाग लेनेवाले विद्वान्, शोधार्थियों से सादर अनुरोध है कि वे उपर्युक्त उप विषय में से किसी एक पर अपना मौलिक, शोध उन्मुख एवं अप्रकाशित शोध-पत्र ससमय प्रेषित कर दें। शोध-पत्र का शीर्षक, मुख्य प्रतिपाद्य, शोध प्रविधि एवं निष्कर्ष स्पष्टत: उल्लिखित होना चाहिए। भविष्य में शोधपत्र को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। पूर्ण शोध आलेख लगभग 3000-4000 शब्दों में होना चाहिए। शोधपत्र पूर्ण रूप से तैयार कर देवनागरी लिपि में KrutiDev010 फॉन्ट अथवा अंग्रेजी में Times New Roman फॉन्ट में टंकित कराकर ई-मेल : **prof.vijaynarayansingh@gmail.com** पर प्रेषित करने का कष्ट करें।